नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

साहित्य है मनोविज्ञान की विषय वस्तु - प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा, दि. 24 अप्रैल 2018 : साहित्य केवल समाज या संस्कृति के प्रभाव को ग्रहण नहीं करता है बल्कि प्रभावित भी करता है। यह एक तरफा सम्बन्ध नहीं है। साहित्य मनोविज्ञान और समाज दोनों को प्रभावित करता है और समाज और मनोविज्ञान भी साहित्य को प्रभावित करता है उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किये।

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर के हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र में 'साहित्य और मनोविज्ञान का अन्तः सम्बन्ध' विषय पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में प्रो. मिश्र बोल रहे थे। भाषा, मात्रात्मक और गुणात्मक विधियाँ, मनोविज्ञान और साहित्य के विभिन्न पक्षों की विस्तृत व्याख्या के

साथ इनके अंतर्संबंधों की चर्चा की। उन्होंने शोधार्थियों की जिज्ञासाओं तथा उनके प्रश्नों पर भी विस्तृत चर्चा की।

प्रो. मिश्र ने कहा कि रचनात्मक या सृजनात्मक साहित्य मनोविज्ञान से बाहर नहीं है। साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा, काव्य, कथा, नाटक, ललित निबंध आदि की विषय वस्तु को देखें तो पाएँगे कि उसमें मनोविज्ञान ही कूट-कूट कर भरा हुआ है। आखिर एक कहानी में आप क्या पाते हैं ? व्यक्ति की प्रेरणा, कल्पना, आकांक्षा, संघर्ष, द्वंद्व...। आप काव्य में भी ऐसा ही कुछ पाते हैं । इस तरह की मानसिक घटनाओं का साहित्य से बड़ा निकट का तथा एकात्म सम्बन्ध है। इस तरह साहित्य की विषयवस्तु मनोविज्ञान की विषय वस्तु हो जाती है।

उन्होंने 'ऋग्वेद की ऋचाओं', 'अभिज्ञानशाकुन्तलम', 'मधुशाला', से लेकर 'मुझे चाँद चाहिए' आदि विभिन्न रचनाओं की चर्चा की। साथ ही उन्होंने कुंवर नारायण की कविता 'पवित्रता' का पाठ भी किया।

प्रो. मिश्र ने कहा कि मनोविज्ञान के क्षेत्र के विद्वानों में फ्रायड, एडलर, युंग, कार्ल रोजर से लेकर इरिकशन ('गांधीज़ ट्रुथ' पुस्तक के लेखक) और उनके शिष्य सुधीर कक्कड़ ('द इनर वर्ल्ड', 'द इंडियन साइकी', 'इंटिमेट रिलेशन', 'द एस्थेटिक ऑफ डिजायर' आदि पुस्तक के लेखक) की चर्चा की । जिसमें उनके सिद्धांतों, मान्यताओं और उसके मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और खासकर साहित्य पर किस तरह के प्रभाव पड़े, इसकी विस्तार पूर्वक व्याख्या की ।

हिन्दी केंद्र के अध्यक्ष, आयोजक प्रो. संजीव कुमार दुबे ने स्वागत वक्तव्य दिये। संचालन केंद्र के प्राध्यापक डॉ. गजेन्द्र कुमार मीणा ने किया। इस अवसर पर गुजरात की वरिष्ठ कथाकार डॉ. बिन्दु भट्ट की विशेष उपस्थिति रही। केन्द्र के प्राध्यापक डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी सहित विभिन्न केंद्रों के शोधार्थी व्याख्यान में उपस्थित थे।